Item Code: 958

Participant Code: 041

खून से सींच मिट्टी

मुझे न बाँटो प्यारे,
पुकारती है अपनी मिट्टी।
लाग है यह मेरे,
रो रही है दुखी धरती।

कदम रखा मिट्टी पर दुश्मन,
खो गई सबका धरमान।
छीन लिया हमारे जान,
न छूने दूँगा मेरे शान।

मासूमो आँखें हो गई नम,
फिर भी उम्मीद है हर कदम।
मन लगा भारी दर्द से,
फिर भी मुस्कुराती विश्वास से।

दिल पर है शांति की तलाश,
करूंगा मैं दुश्मनों का विनाश।
तोड़ दिया हज़ारों सपना,
आधार है मिट्टी अपना।

साँसें हो गई बंद,
फिर भी बचाऊँगा मेरा पसंद।
काट लिया मेरे बदन,
पहचान है मेरी, यह वतन।

आगे बढ़ूँगा हर हाल,
मैं बनूँगा मिट्टी की ढाल।
विनाश की धुँआ फैली चार ओर,
मानव की दुआ उठी गगन की ओर।

खून से सींचा मिट्टी,
यह कर्तव्य है यह मेरी।
खिलेगा शांती की सुबह,
देखना है सुकून की प्रवाह।